लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2 संख्या: 2 ; जनवरी-जून, 2021

# बिहुगीत

✍ पूजा बरुवा

बिहु असमीया जाति का जातीय उत्सव है, पूरे असमीया जाति की पहचान है। असमीया लोग तीन प्रकार के बिहु मनाते हैं – रङाली या बहाग बिहु, भोगाली या माघ बिहु और कङाली या काति बिहु। इन सभी बिहुओं में अलग-अलग प्रकार के नियम तथा परम्पराएँ होते हैं। इन तीन बिहुओं में से रङाली बिहु सर्वाधिक लोकप्रिय है। रङाली बिहु रंगों का बिहु है, रंगीन बिहु है। इस बिहु में समग्र असम झूम उठता है। प्रकृति भी नये हरे वस्त्रों से सुशोभित हो उठती है। रङाली बिहु में लोग जी भरकर बिहु नाचते हैं। बिहु नृत्य के समय कुछ सुंदर गीत गाये जाते हैं, जो हृदय की सहज अभिव्यक्ति होते हैं। बिहुगीत असमीया लोकसाहित्य का अक्षय भंडार है। बिहुगीतों का विषय मूलतः प्रेम होता है। युवक-युवतियों के प्रेम, मिलने की आकांक्षा, विरह की पीड़ा, प्रकृति का अनुपम चित्र आदि बिहुगीतों के वर्ण्य विषय हैं। इनके अलावा भी कुछ अन्य विषयों से संबन्धित बिहुगीत भी पाये जाते हैं। बिहुगीत असमीया लोगों का कंठहार है, असमीया ग्रामीण जनजीवन का प्रतिबिंब है। गाँव के सहज-सरल लोगों द्वारा गाये जाने-वाले ये गीत सुर, ताल, लय, बोधगम्यता, संप्रेषणीयता एवं प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से अद्वितीय हैं। यहाँ बिहुगीत की झाँकी प्रस्तुत की गयी है।

1

**बेजार नकरिबा बिहुर दिनते**
**हियात मोर निदिबा शोक।**
**जनमे मरणे हॅम मइ सारथि**
**नोपोवा तुमि ऐ दुख॥**

**भावार्थ :**

दुःखी मत होना बिहु के दिन हैं
हृदय को न देना शोक।
जनम जनम तक साथी बनूँगा मैं
न दूंगा तुम्हें दुःख॥

**2**

**बहागर बिहुते पूर्णिमार रातिते**
**पातिम तोरे मोरे बिया।**
**दुयो एकलगे घरे पाति याम**
**मिलाम ऐ दुखनि हिया॥**

**भावार्थ :**

बैशाख बिहु में पूर्णिमा की रात को
हम दोनों शादी करेंगे।
दोनों एकसाथ संसार करेंगे
दो दिल मिल जायेंगे।

**3**

**योवा राति सपोनटि देखिलौं**
**काहीत खाइ आछिलौं भात ।**
**तोमार निचिना मिठा बरणीया**
**हातत दि आछिलौं हात ॥**

**भावार्थ :**

कल रात को एक सपना देखा
थाली में खाया था भात ।
तुम्हारी जैसी थोड़ी सी गोरी के
हाथों में रखकर हाथ ॥

**4**

**जाँजी नै एरिब पारो मइ लाहरी**
**दिखौ नै एरिब पारौं ।**
**तोमारे मरम मइ एरिब नोवारौं**
**नेखायो थाकिब पारौं ॥**

**अनुवाद :**

जाँजी नदी को प्यारी छोड़ सकता हूँ
दिखौ नदी छोड़ सकता हूँ ।
तुम्हारे प्यार मैं छोड़ नहीं सकता
खाये बिन भी रह सकता हूँ ॥

**5**

**बिहुरे बतरत मरमर चेनाइटि**
**केतिया लगे पाम तोक ।**
**तोके ऐ सावटि केतिया चेनाइटि**
**पलुवाम यौवनर भोक ॥**

**भावार्थ :**

बिहु के मौसम में ओ प्यारे प्रीतम
कब तक मिलेंगे हम ।
तुझे से गले लगा कब ओ प्रीतम
मिटेगी यौवन की भूख ॥

**6**

**इमानकै बुजाले नुबुज नाचनी**
**कथालै नकर काण ।**
**गछर गुटि नहय बारे बारे लागिब**
**यौवन गले पाबले टान ॥**

**भावार्थ :**

इतना समझाया तू नहीं समझती
न देती बातों पर ध्यान ।
पेड़ की गुटली नहीं जो बार बार आयेगा
जाने से न मिलेगा यौवन ॥

**संपर्क-सूत्र**
सहायक अध्यापिका
हिंदी विभाग, नगाँव महाविद्यालय (ओटोनोमस)
**ई-मेइल : pujabaruah7274@gmail.com**